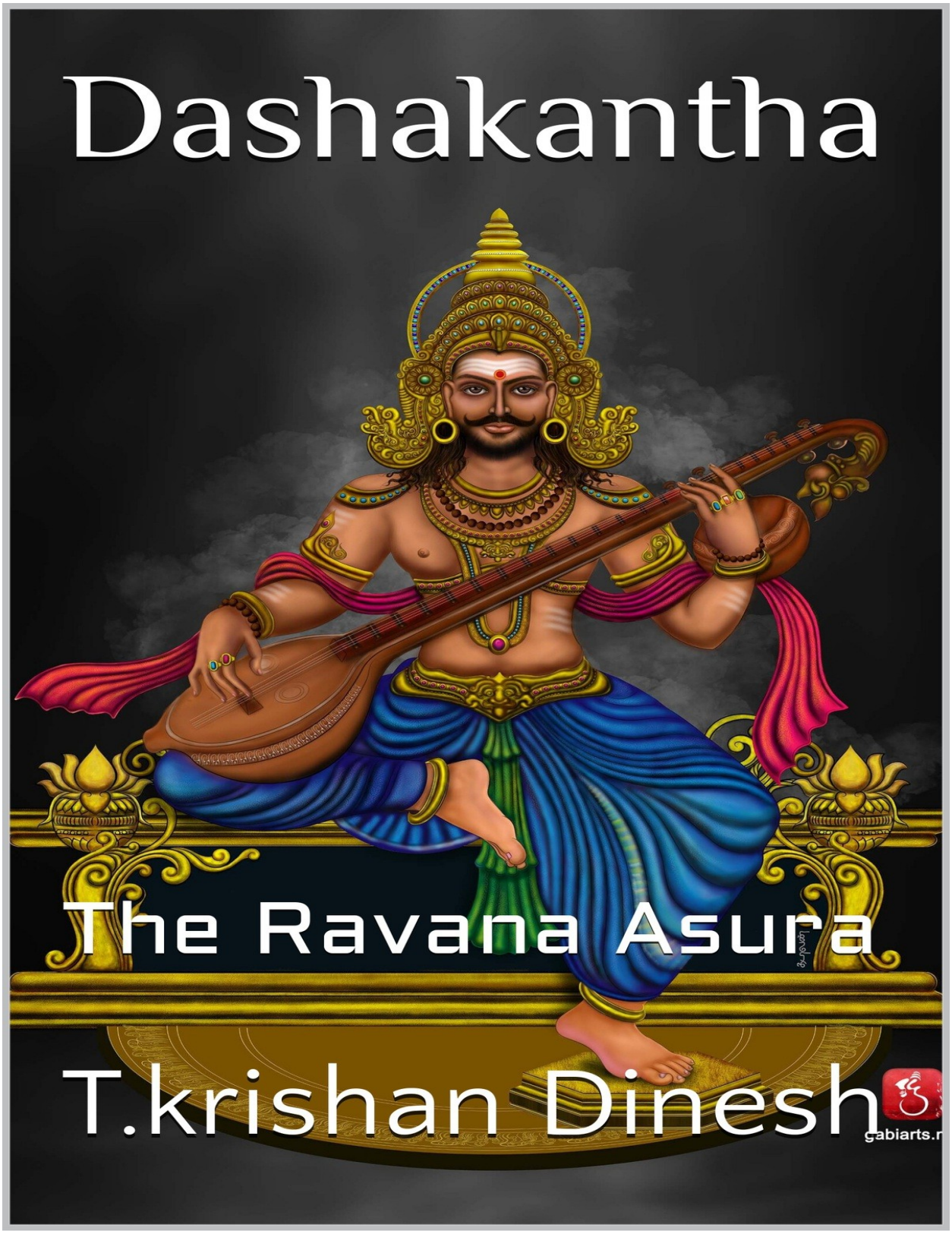

Dashakantha -Ravana Asura

प्रस्तावना
ये रामायण नामक भारतीय महाकाव्य की कुछ कहानियाँ हैं, जिसमें रावण असुर का चरित्र है। महाकाव्य के महान नायक और गुमनाम शख्सियत रावण असुर हैं। कुछ देशों में उन्हें देवता के रूप में भी पूजा जाता है। आइए जानते हैं इस गुमनाम नायक की कुछ महान कहानियाँ।
यह शब्द तमिल भाषा के "इरावनान" से लिया गया है, जिसका अर्थ है अतुलनीय सुंदरता वाला पुरुष और दृढ़ सिद्धांतों वाला पुरुष।
समर्पण
मैं सभी को धन्यवाद देना चाहता हूं।
जो सच्चे अर्थों में पुस्तक प्रेमी हैं।
मेरा परिवार और दोस्त।
सच्चे और सुंदर मन वाले लोग जो पढ़ने का आनंद लेते हैं, उन्हें पढ़ने से पोषण मिलता है।
स्वीकार करना
मैं इस अवसर का लाभ उठाना चाहूंगा।
मेरी प्रकाशन टीम को धन्यवाद देने के लिए।"
“पुस्तक पर मौजूद सभी लोगों को धन्यवाद।”
मेरी इतनी मदद करने वाली टीम को।
पुस्तक प्रेमियों,
मुझे उम्मीद है कि यह किताब आपको मदद करेगी आपके काम से बाहर और आपको ले जाएगा
प्यार की दुनिया।
मुझे इससे ज्यादा खुशी किसी और चीज में नहीं होगी यह किताब हर जगह आपके हाथों में है
सड़कों पर टहलते पाठक,
ब्राउज़र घर पर एक किताबों की दुकान में है।
यह एक बड़ी चुनौती है जो सामने आती है
मुझसे आगे है लेकिन यह निश्चित रूप से देखने लायक है।
एक प्रयास।
अपने व्यस्त जीवन से समय निकालें।
खुशी मनाने का कार्यक्रम।

आशा है आपको यह पसंद आएगा।
अस्वीकरण
यह एक काल्पनिक रचना है।
चित्रित पात्र काल्पनिक हैं और
किसी वास्तविक व्यक्ति से कोई समानता या
मृत्यु महज एक संयोग है।
पुस्तक की विषयवस्तु दर्शाती है
यह लेखक की अभिव्यक्ति और राय का पूर्ण उदाहरण है।
एक काल्पनिक रचना होने के नाते, यह शास्त्रोक्त होने का दावा नहीं करती। प्रामाणिकता।
परिचय
रावण असुर को अनेक लोग लंका के राजा के रूप में जानते हैं। प्राचीन कथाओं में रावण असुर को खलनायक के रूप में चित्रित किया गया है, लेकिन वास्तव में वह एक महान शासक, संगीतकार और भगवान शिव के भक्त थे। वे एक महान विद्वान थे, उन्होंने अपने राक्षस और देशवासियों के कल्याण के लिए अनेक कार्य किए और कई लोग उनके भक्त हैं। आश्चर्यजनक रूप से, विश्व भर में उनके मंदिर मौजूद हैं। उन्होंने कला को प्रोत्साहित किया। ये उनकी कुछ ऐसी कथाएँ हैं जो विश्व को ज्ञात नहीं हैं। वे वास्तव में एक गुमनाम नायक और नेक आत्मा थे।
हमारा सनातन धर्म इतना अनमोल और महान है कि वैदिक धर्म से संबंधित असुरों ने भी अतुलनीय तपस्या और भक्ति का प्रदर्शन किया।
देव और राक्षस का जन्म
जीवन की रचना करने से पहले भगवान श्री महा विष्णु योग निद्रा (आध्यात्मिक नींद) में थे और भगवान श्री महा विष्णु से नाभि के माध्यम से भगवान ब्रह्मा का जन्म हुआ। भगवान ब्रह्मा जीवन के निर्माता थे। उन्होंने सबसे पहले जल की रचना की, और जीवन उसी जल रूप से उत्पन्न हुआ। कुछ जीव-जंतुओं ने कहा कि हम इस जल की रक्षा करेंगे और कुछ जल ने कहा कि वे इस जल की पूजा करेंगे। जिसने कहा कि हम जल की रक्षा करेंगे, वह राक्षस बन गया और जिसने कहा कि हम पूजा करेंगे, वह देव या यक्षुलु बन गया।
कुछ राक्षसों ने रक्षा करने के बजाय उनका विनाश करना शुरू कर दिया, जिसके कारण राक्षसों का नाम खराब हो गया। भगवान ब्रह्मा द्वारा सृजित राक्षसों

में सबसे शक्तिशाली हाथी और प्राहति थे। इनमें से प्राहति अच्छा था, जो अपने काम से काम रखता था और दूसरों को परेशान नहीं करता था। हाथी हमेशा किसी न किसी चीज का भूखा रहता था।

जया और विजया के राक्षस के रूप में जन्म के पीछे की कहानी
रावण का जन्म और उसके पीछे का कारण कृतयुग से भी पहले शुरू हो गया था। भगवान ब्रह्मा सृष्टि करते समय एक विचार के साथ चार लोगों की रचना करने के लिए प्रेरित हुए। वे हैं "सनक, सनन्धन, सनन्धन और संथकुमार"। इस प्रकार, सृष्टि करते समय वे हर भाव में सोचते हैं और उसी से रचना करते हैं। इसीलिए उन्हें ब्रह्ममानस पुत्र कहा जाता है। वे हमेशा बच्चों जैसे दिखते हैं और युगों-युगों तक बच्चों जैसे ही रहेंगे।
एक दिन वे भगवान विष्णु से मिलने उनके निवास स्थान वैकुंठ गए, जहाँ विष्णु रहते हैं। वैकुंठ के द्वार पर जया और विजया नामक दो रक्षक मौजूद थे, जिन्होंने उन्हें अंदर जाने से रोक दिया।
आप कौन हैं? आप कहाँ जा रहे हैं? उन्होंने पूछा और जवाब मिला कि वे भगवान विष्णु से मिलने आए हैं और उन्होंने उन्हें भगवान से मिलने के लिए अंदर जाने को कहा है। उन्होंने सोचा कि ये लोग बच्चे हैं। वे हँसे और बोले कि भगवान अंदर सो रहे हैं और हम आपको अंदर जाने नहीं दे सकते और आप उनसे मिल भी नहीं सकते, अब आप चले जाइए।
तब ब्रह्ममानस पुत्रों को संदेह हुआ कि क्या वे हमें सच बता रहे हैं या मूर्ख बनाने की कोशिश कर रहे हैं? हम तो बच्चों जैसे दिखते थे। उन्हें शक हुआ और उन्होंने दिव्य दृष्टि (दूरदृष्टि) से जाँच शुरू की, जिससे पता चला कि भगवान भीतर मुक्त हैं। "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? हमें धोखा देने की?" वे क्रोधित हो गए और उन्हें श्राप दिया कि वे अपनी दिव्यता खो देंगे और पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में जन्म लेंगे। ब्रह्ममानस पुत्र वैकुंठ छोड़कर चले गए।
तब जया और विजया डर गईं, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें, वे दौड़कर दरवाजे से अंदर चली गईं। भगवान विष्णु को सब कुछ पता था, क्योंकि वे संसार के स्वामी हैं।
इससे पहले कि वे एक शब्द भी कहें, वह कहता है, अब रुक जाओ, तुम्हारे पास केवल दो विकल्प हैं।(1) मेरे भक्त के रूप में 7 जन-मा।

(2) प्रभु ने कहा, “हम तीन जनामा तक आपके शत्रु बने रहेंगे। तब उन्होंने उत्तर दिया, हे ईश्वर, हम एक जनामा तक भी आपका साथ नहीं छोड़ सकते और आप कहते हैं सात जनामा तक। सात जनामा तक आपसे दूर रहने के बजाय, तीन जनामा तक आपका शत्रु बने रहना बेहतर है।”
दरअसल, उनके डर का ठोस कारण है क्योंकि यह समय का फैलाव है। वैकुंठ ब्रह्मांड के सबसे शुद्ध छोर पर स्थित है। इसलिए, अंतरिक्ष और समय के फैलाव के अनुसार वहां बहुत अधिक भिन्नता होती है। वैकुंठ में एक घंटा पृथ्वी पर दस लाख वर्षों के बराबर होता है।
तो, जैसा कि उन्होंने कामना की थी कि 3 जन-मा शत्रुओं के रूप में जन्म लें और भगवान द्वारा मारे जाएँ। उनकी यह इच्छा पूरी हुई और उनका जन्म शुरू हो गया।
ऋत युग में उनका जन्म हुआ था।
हिरण्यक्ष नामक राक्षस का वध भगवान श्री महा विष्णु के अवतार आदि वराह मूर्ति ने किया था, और हिरण्यकशिप का वध भगवान विष्णु के अवतार नरसिंह ने किया था। इस प्रकार पहला जन्म संपन्न होता है और अब हमारी कहानी रावण के जन्म से शुरू होती है।

कुबेरा का जन्म
"सनक, सानंदन, संथान और सनथकुमार" के साथ भगवान ब्रह्मा ने दस और लोगों को बनाया है जिनके नाम हैं "अंगिरस, अत्रि, पुलस्त्य, मारीचि, कुलहा, क्रतु, ब्रिघु, वशिष्ठ, दक्ष प्रजापति और नारद।" यहाँ तक कि उन्हें ब्रह्मा मनसा पुत्र भी कहा जाता है।
इनमें से पुलस्त्य ऋषि के पोते रावण असुर हैं। अतः हम यह भी कह सकते हैं कि रावण भगवान ब्रह्मा का परपोता है।
जब ऋषि पुलस्त्य नियमित तपस्या कर रहे थे, तब कुछ अप्सराएँ (देव कन्याएँ) उनके पास आकर उनके सामने नृत्य करती थीं ताकि उनकी तपस्या में खलल पड़े। एक दिन, उन्हें क्रोध आ गया और उन्होंने कहा, "यदि तुमने मुझे फिर से परेशान किया और जिस पर भी मेरी दृष्टि पड़ेगी, वह गर्भवती हो जाएगी।" यह सुनकर सभी अप्सराएँ भाग गईं। उन्होंने सोचा कि अब वे शांतिपूर्वक तपस्या कर सकते हैं और उन्हें राहत मिली। कुछ दिनों बाद, राजा तृणबिंदु की पुत्री मानिनी कुछ खोजते हुए वहाँ आई और उस भूमि पर भटक रही थी जहाँ ऋषि तपस्या कर

रहे थे। मानिनी के पदचिह्न सुनकर ऋषि पुलस्त्य ने अपनी आँखें खोलीं और उसे घूरने लगे, जिससे राजकुमारी गर्भवती हो गई। तब राजकुमारी मानिनी दौड़कर अपने पिता के पास गई। अपनी गर्भवती पुत्री को देखकर राजा स्तब्ध रह गए और उन्हें दिव्य दृष्टि से सब कुछ पता चल गया। वे तुरंत पुलस्त्य ऋषि के पास गए और कहा, "हे महान ऋषि, कृपया मेरी पुत्री का विवाह कराएँ।" ऋषि ने कहा, "जी हाँ, विवाह करा दीजिए।" पुलस्त्य ऋषि मान गए।
कुछ महीनों बाद उन्हें एक पुत्र की प्राप्ति हुई, जिसका नाम उन्होंने “विश्ववासु ब्रह्मा” रखा। विश्ववासु ब्रह्मा वर्षों बाद बड़े होकर एक वयस्क पुरुष बने और अपने पिता से सब कुछ सीखा। महान ऋषि भारद्वाज ने अपनी पुत्री का विवाह विश्ववासु से करवाया और कुछ वर्षों बाद उन्हें एक पुत्र की प्राप्ति हुई, जिसका नाम उन्होंने “कुबेर” रखा।

कुबेर को लंका उपहार में दिए जाने की कहानी
कुबेर ने अपने दादा (भगवान ब्रह्मा) के लिए घोर तपस्या की और अपार धन-संपत्ति के साथ-साथ उत्तर दिशा की ओर नेतृत्व प्राप्त किया। ब्रह्मा ने इसके साथ ही अपने परपोते को पुष्पक विमान भेंट किया, जिसकी विशेषता यह है कि इसमें चाहे कितने भी लोग हों, हमेशा एक और व्यक्ति के लिए जगह रहेगी। इस प्रकार कुबेर को अनेक शक्तियाँ, वरदान और अपार धन-संपत्ति प्राप्त हुई, परन्तु अब उन्हें शासन करने के लिए एक स्थान की आवश्यकता थी। अतः उन्होंने अपने पिता विश्ववासु ब्रह्मा से स्थान का अनुरोध किया। तब उनके पिता ने बताया कि पृथ्वी पर दक्षिणी महासागर में एक द्वीप है, जिसका नाम लंका है। देवों के अभियंता विश्वकर्मा ने इसे देवों के राजा इंद्र के लिए बनवाया था। इंद्र ने विश्वकर्मा से उस स्थान पर यह महल बनवाने को कहा था जहाँ वे जब भी समय मिले विश्राम कर सकें। यह महल पूरी तरह से सोने का बना था और चमकता रहता था। कुछ समय बाद राक्षसों ने लंका पर कब्जा कर लिया, तब भगवान महा विष्णु लंका को बचाने आए। अब यह मुक्त है और आप इसकी मरम्मत करवाकर इसमें रह सकते हैं। इस प्रकार कुबेर को उनके पिता विश्ववासु ने निर्देश दिया, जिसके बाद वे लंका में बस गए।

“Viswavasu” (“Vishrava”)
कुछ समय बाद "काइकेसी" से शादी करना

विश्ववासु ब्रह्मा नामक कालावधि
किसी अजीब कारण से उसने एक दूसरी महिला से शादी कर ली थी जिसका नाम था "कैकसी"।

अब तक “विश्ववासु ब्रह्मा
"पृष्ठभूमि देवगुण थी, लेकिन यह
समय में “विश्ववासु” का जन्म हुआ था।
Brahmin and named as “Vishrava”
जिसने “काइकेसी” से शादी की Asura(Rakshasa) girl. “Kaikesi” and विश्रवा का एक पुत्र था जिसका नाम था
“रावण।”
जब उनका बेटा "कुबेरा" बस गया था
Lanka. So, ”Vishrava” has started
लंका में तपस्या करते हुए। एक सुंदर
एक महिला उसके पास आई और उससे पूछा
उसे यह आश्वासन दिया कि वह उसकी सेवा करेगी और वह
उसने कहा ठीक है, कुछ महीनों में वह पूछेगी
उसने उससे शादी करने का प्रस्ताव रखा। उसकी ईमानदारी से प्रभावित होकर उसने उसका विवाह स्वीकार कर लिया।
उसने प्रस्ताव रखा और उससे शादी कर ली जो थी
called “Kaikesi”.

बाद में वह अपने पिता के पास जाती है और कहती है
पिताजी, आपकी इच्छा के अनुसार मैंने एक देव से विवाह किया।
गुना व्यक्ति और हमारी योजना बस इसी बारे में है।
सफलता प्राप्त करें और हमारे लिए नए दिन आएं।
अच्छा समय शुरू होने वाला था। जब
“काइकेसी” ने अपने पिता से ये शब्द कहे।
खुश महसूस किया।

संताना (बच्चों) का जन्म
"कैकसी"
यद्यपि विश्वरावा को कैकेसी परिवार के बारे में पता था कि वे असुर (राक्षस) हैं, फिर भी उन्हें विश्वास था कि कैकेसी उनके परिवार में अच्छी हैं। कुछ समय बाद कैकेसी ने विश्वरावा से संतान उत्पन्न करने का अनुरोध किया, तो विश्वरावा ने कहा कि अभी इस बारे में बात करने का सही समय नहीं है।
उन्होंने कहा कि शाम के समय हमें संतानों के बारे में बात नहीं करनी चाहिए, आपको नहीं पता कि शाम के समय को "असुर संध्या वेला" कहा जाता है, जिसका अर्थ है कि यह राक्षसों के लिए अनुकूल समय है।
“दशग्रीव” का जन्म या
“Dashanan”(Ravana)
इसलिए, उस समय हमें संतानों के बारे में बात नहीं करनी चाहिए थी; अगर हम बात करेंगे तो बच्चों में असुर मानसिकता पैदा हो जाएगी; यह उस समय प्रचलित एक प्रबल मान्यता थी। लेकिन कैकेसी ने इस बात की परवाह नहीं की; उन्होंने कहा, मुझे अभी जो चाहिए, वही चाहिए।
असुर संध्या काल के नौ महीनों के बाद एक दस सिरों वाला बालक जन्मा जो देखने में भयानक था। तब विश्वराव ने अपनी शक्ति का प्रयोग करके उसके दस सिरों को गायब कर दिया। दस सिरों वाले बालक का नाम रावण (दशग्रीव) रखा गया। उसके बाद एक और बालक का जन्म हुआ जिसका नाम कुंभकरण रखा गया। उसके छोटे भाई विभीषण, खर, धूषण और अहिराव थे। उनकी दो बहनें थीं, एक कुंभिनी और दूसरी मीनाक्षी (शूर्पणखा)।
इनमें से विभीषण एक नेक और निर्दोष व्यक्ति है, जबकि रावण असुर बुद्धिमान है। तीनों भाई रावण असुर, कुंभकरण और विभीषण अपने पिता के विश्वरवा गुरुकुल में दाखिला लेते हैं, जबकि रावण असुर को सीखने में बहुत रुचि होती है।
उन्होंने सकलवेद, शास्त्र और उपनिषदों का अध्ययन किया और एक महान विद्वान बने। उन्होंने सब कुछ अपने पिता से सीखा।
“कैकेसी” रावण को राक्षस (असुर) धर्म का उपदेश देता है। एक व्यक्ति को अपने वचन का पक्का होना चाहिए।
उसे अपने दिल की बात कहनी चाहिए।

उसे ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए जिससे उसे गलत समझा जाए। धोखा नहीं देना चाहिए, चाहे असफलता निश्चित ही क्यों न हो। महिलाओं का सम्मान करना चाहिए।
किसी का अपमान नहीं करना चाहिए।
अगर अन्याय हो तो किसी भी कीमत पर उसके खिलाफ लड़ो।
"कैकेसी" पिता "सोमाली" की कहानी
कुछ वर्षों बाद जब कैकेसी रावण असुर के साथ अपने जन्मस्थान पर जाएगी।
कैकेसी के पिता का नाम सोमाली है, जो रास्तला लोक में रहते हैं और दैत्यों के राजा हैं। सभी बच्चे अपने दादा सोमाली के साथ खेलते हैं, लेकिन सोमाली को रावण असुर अधिक पसंद है; वे अपने पोते को देखकर प्रसन्न होते हैं।
तब रावण असुर ने अपने दादा से पूछा कि आप इस लोक में इस स्थान पर क्यों हैं? दादा ने कहा कि यह विष्णु की कृपा से है। ओह! क्यों? रावण असुर ने पूछा। तब उसके दादा ने इस बारे में सोचा और कहा कि अब बताने का समय आ गया है कि क्या हुआ था।
एक दिन, हाटी ने कलुदी की बहन बिंदु से विवाह कर लिया और अपनी इच्छा पूरी कर ली। कुछ महीनों बाद, उन्हें एक बेटा हुआ जिसका नाम विदुत्केशुदु रखा गया। बड़े होने पर, हाटी ने संध्या पुत्री से विवाह कर लिया। संध्या पुत्री की यौन इच्छाएँ बहुत प्रबल थीं। विवाह के बाद वह गर्भवती हो गई और उसे लगा कि बच्चे को जन्म देने और पालने से उसकी यौन इच्छाएँ पूरी नहीं हो पाएंगी। इसलिए, उसने बच्चे को मंद्राचलम नामक पर्वत पर छोड़ दिया। बच्चा धूप की गर्मी सहन नहीं कर पा रहा था और रोने लगा।
तब भगवान शिव और पार्वती आकाश में विचरण कर रहे थे और उन्होंने उस बच्चे को देखा। उन्हें उस पर दया आई और उन्होंने बच्चे को कुछ वरदान दिए। भगवान शिव ने उसे देवगुण प्रदान किए, जिससे वह आकाश में उड़ सकता था, वह सदा युवा रहेगा, वह किसी भी युद्ध में विजयी होगा और उसे कई शक्तिशाली हथियार दिए गए।
पार्वती माता ने बच्चे पर हाथ रखकर कहा कि तुम्हारे संतान अमर होंगे। उन्होंने लड़के का नाम सुकेशुदु रखा।
समय बीतने के साथ-साथ सुकेशुदु बड़े हो गए और उन्होंने रावती नाम की एक महिला से शादी कर ली। कुछ महीनों बाद उन्हें तीन पुत्र हुए, जिनके नाम थे "मालवंथुदु", "सोमाली" और "माली"।

बड़े होने पर उन्हें याद आया कि उनके पिता को अमरता का वरदान प्राप्त हुआ था और उन्हें देवगुण भी प्राप्त हुए थे। इसलिए उन्होंने सोचा कि उन्हें भी देवगुण प्राप्त होने चाहिए और उन्होंने भगवान ब्रह्मा से वरदान मांगने के लिए तपस्या करने का निर्णय लिया। उन्होंने आपस में चर्चा की और भगवान ब्रह्मा की तपस्या शुरू कर दी। कुछ समय बाद भगवान ब्रह्मा उनके सामने प्रकट हुए और उनसे पूछा, "तुम क्या चाहते हो?" उन्होंने कहा, "हम अपने लिए देवगुण चाहते हैं।" भगवान ब्रह्मा ने कहा, "नहीं, यह तुम्हें नहीं दिया जा सकता, इसके अलावा जो चाहो मांग लो।" उन्होंने कुछ देर सोचा और कहा, "हमें देवताओं को पराजित करने की शक्ति दो।" तब भगवान ब्रह्मा ने उन्हें एक शर्त के साथ वरदान दिया, "भगवान विष्णु को छोड़कर तुम सभी देवताओं को पराजित कर सकते हो।" यह कहकर भगवान ब्रह्मा अंतर्धान हो गए। फिर उन्होंने “देवताओं” के विरुद्ध युद्ध शुरू किया और “इंद्र” (देवताओं के राजा) को पराजित किया और “इंद्र” को पराजित करने के बाद उन्होंने “इंद्र” की संपत्ति पर कब्जा कर लिया, लेकिन “इंद्र” की सारी संपत्ति में से उनकी सबसे अधिक रुचि लंका में थी, जिसका निर्माण “विश्वकर्मा” ने करवाया था।
तो वे लंका में बस गए। फिर इंद्र भगवान श्री महा विष्णु के पास गए और भगवान विष्णु से सहायता मांगी। तब भगवान विष्णु गरुड़ पर सवार होकर लंका गए और उन्हें देखकर राक्षस लंका से भाग गए। तब तीन भाई भगवान विष्णु से युद्ध करने के लिए आगे आए। उस युद्ध में माली मारा गया और बाकी दो भाई मालवन्थुडु और सोमाली आकर रास्तला लोक में रहने लगे। सोमाली ने अपने पोते रावण असुर को अपनी कहानी सुनाई।
कुछ समय बाद मुझे पता चला कि कुबेर को लंका मिल गई, जो मेरी थी। मुझे यह बात असहनीय लगी और देवता खुश थे कि मैं इसे पचा नहीं पाया। इसलिए मैंने अपनी बेटी कैकेसी से कहा कि वह एक देवगुणी व्यक्ति से विवाह करे, ताकि तुम्हारे पुत्रों को भी देवगुण प्राप्त हो और हमारे परिवार में भी एक देवगुणी व्यक्ति हो। फिर उसने तुम्हारे पिता विश्रवा से विवाह किया और तुम उनसे पैदा हुए। पूरी कहानी सुनकर रावण असुर को केवल एक ही बात समझ आई कि भगवान शिव, जिन्होंने मेरे परदादा की मनोकामनाएं पूरी कीं, हमारे पक्ष में हैं और भगवान विष्णु हमारे शत्रु हैं। बाद में वह भगवान शिव का भक्त बन गया और भगवान विष्णु से क्रोधित हो गया। उसके मन में बचपन से ही उसके दादा सोमाली द्वारा जहर भरा गया था।

कुछ वर्षों बाद रावण असुर बड़ा हो गया और उसने गुरुकुल में अपनी शिक्षा पूरी कर ली। घर लौटने पर उसकी माँ ने कहा, "तुम्हारी पढ़ाई का कोई लाभ नहीं है। इसलिए कुछ हासिल करो और घर लौट आओ।" तब उसने अपनी माँ कैकेसी से पूछा, "आप ऐसा क्यों कह रही हैं? आप मुझसे क्या चाहती हैं?" तब उसकी माँ ने उत्तर दिया, "तुम जानते हो कि हमारे साथ जो हुआ है वह अन्याय है। मैं तुम्हें देवगुणों के समान महान कार्य करते देखना चाहती हूँ।" तब रावण ने कहा, "माँ, मैं देवताओं से भी कहीं अधिक महान बनूँगा" और वह वहाँ से चला गया।

ब्रह्मा से वर (इच्छाएं) प्राप्त करना
जैसा कि उसने कहा कि वह कुछ हासिल करेगा, उसने अपने भाइयों के साथ हिमालय की यात्रा शुरू की और तपस्या करने लगा। हर कोई अपने-अपने तरीके से तपस्या कर रहा है। रावण असुर ने भगवान ब्रह्मा को प्रसन्न करने के लिए एक पैर पर खड़े होकर अपने चारों ओर अग्नि की आराधना करते हुए तपस्या शुरू की।
समय बीतने पर रावण असुर ने कहा, “दादाजी, यदि आप मेरे सामने नहीं आएंगे तो मैं अपने सिर काट लूंगा।” फिर उसने एक-एक करके अपने सिर काटने शुरू कर दिए। जब वह अपना दसवां सिर काटने ही वाला था, तब भगवान ब्रह्मा उसके सामने प्रकट हुए और कहा, “हे मेरे पोते, मैं तुम्हारी तपस्या और यज्ञों से प्रसन्न हुआ हूं। हे मेरे पोते, तुम्हारी क्या इच्छा है?” तब रावण असुर ने कहा, “मैं किसी के हाथों मरना नहीं चाहता।” तब भगवान ब्रह्मा ने कहा, “इसके अलावा जो चाहो मांग लो।” उन्होंने कहा, “देवताओं, राक्षसों, यक्षुओं, किर्णुओं, किंपुराशूलों, ऋषियों और गंधर्वों” के हाथों मेरी मृत्यु न हो।” संक्षेप में, उन्होंने मनुष्यों को छोड़कर सभी का नाम लिया। तब भगवान ब्रह्मा ने मन ही मन सोचा कि तुम्हारी मृत्यु केवल मनुष्यों के हाथों ही होगी। उन्होंने ऐसा सोचकर रावण असुर की इच्छा पूरी कर दी।
तब कुंभकरण ने कुछ पूछना चाहा। उसकी इच्छा को भांपते हुए भगवान ब्रह्मा ने देवी सर्वास्ती को आँख मारी, जिन्होंने कुछ मायाजाल किया जिससे वह बोलने में असमर्थ हो गया। उसने सोने की इच्छा जताई। यह सुनकर भगवान ब्रह्मा ने उसे अनुमति दे दी। रावण असुर ने कहा कि वह इस तरह सोता रहेगा तो मर जाएगा। तब ब्रह्मा ने कहा कि मैं कुछ बदलाव करूंगा और कहा कि तुम साल के छह महीने सोओगे और छह महीने आराम करोगे और खाओगे।

तब विभीषण ने कहा, हे भगवान ब्रह्मा, मुझे सदा धर्म का मार्ग अपनाना चाहिए।
ब्रह्मा प्रसन्न हुए और उनकी इच्छा पूरी की। बाद में लौटते समय ब्रह्मा रावण असुर के सिर लौटा लाए, जिनका बलिदान रावण ने तपस्या के दौरान किया था। वरों ने अपने अधिकार वापस पाने के लिए लंका पर युद्ध छेड़ दिया।

लंका पर अधिकार प्राप्त करना: जब कुबेर ने सुना कि उसका सौतेला भाई रावण असुर लंका पर अधिकार करने आ रहा है, तो वह अत्यंत प्रसन्न हुआ और बोला, “मेरे पिता ने लंका मुझे तब दी थी जब वह राक्षसों से मुक्त थी, और मैंने इस स्थान को दान, सम्मान और अन्य सद्गुणों से सुसज्जित करके बसाया है। जैसे यह नगर और राज्य मेरे हैं, वैसे ही ये तुम्हारे भी हैं, हे भाई! बिना किसी लड़ाई के इस राज्य का आनंद लो।”
लेकिन रावण असुर अपना राज्य किसी के साथ साझा करने को तैयार नहीं था; वह इसे केवल अपने और अपने राक्षसों के लिए चाहता था। इसलिए, कुबेर ने अपने पिता के सुझाव पर लंका छोड़ दी और हिमालय चले गए।
लंका किस प्रकार रावण असुर के अधीन आई? रावण असुर ने लंका को राक्षसों के समान माना और उसे उस काल में अपने मनचाहे स्तर तक ले गया। कहा जाता है कि देश के सबसे गरीब घरों में भी भोजन के लिए सोने के बर्तन थे। लोग भूख का अर्थ ही नहीं जानते थे। लंका में गरीबी का कोई नाम ही नहीं था। इसीलिए लोगों ने रावण असुर को लंकेश्वर नाम दिया।

रावण असुर के साथ युद्ध
"क्योंकि"
रावण असुर का अपने सौतेले भाई कुबेर के साथ युद्ध उसके जीवन का पहला युद्ध था। रावण असुर लंका से कैलाश पर्वत स्थित कुबेर के क्षेत्र पर विजय प्राप्त करने के लिए निकला था और अपने साथ लंका के वीर राक्षस योद्धाओं की एक विशाल सेना ले गया था।
इस युद्ध में रावण के सैनिकों ने कुबेर यक्ष से युद्ध किया और उन्हें अल्पकाल में परास्त कर दिया। रावण ने कुबेर के द्वारपाल, सूर्यभानु नामक यक्ष से भयंकर युद्ध किया। राक्षस ने अपने गदा से सूर्यभानु को मार डाला और बाण से कुबेर को अपनी पूरी शक्ति से नीचे उतरने पर मजबूर कर दिया। कुबेर और रावण के बीच भीषण युद्ध छिड़ गया। दोनों ने एक-दूसरे पर कई दिव्य अस्त्र

चलाए। रावण असुर ने कुबेर के आग्नेय अस्त्र का अपने वरुण अस्त्र से प्रतिवाद किया। लंबे समय तक चले इस युद्ध में रावण असुर कुबेर को हराने में सफल रहा।
रावण की शक्ति देखकर कुबेर ने राक्षस से युद्ध रोक दिया। रावण असुर ने बदले में कुबेर के उस वाहन को छीन लिया जिसे पुष्पक विमान के नाम से जाना जाता है।
“रावण असुर” शिव द्वारा लिखित
Tanadav Stotram
हम जानते हैं कि रावण असुर को बचपन से ही भगवान शिव के प्रति गहरी श्रद्धा थी और उम्र के साथ यह श्रद्धा बढ़ती गई। उसने भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए अनेक अभिषेक किए।
भगवान शिव के प्रति उनकी अपार प्रेम और भक्ति के कारण उन्होंने शिव तांडव स्तोत्रम की रचना की, जो पंचचर्मार छंद में है। यह लघु और गुरु के साथ चौपाइयों की एक पंक्ति है। रावण असुर ने भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए इसकी रचना की थी, जब उसने शिव से कैलाश पर्वत छोड़कर श्रीलंका आने का अनुरोध किया था।
रावण इतना हठी था कि उसने कैलाश पर्वत को उठाने की कोशिश भी की। रावण को लगा कि वह थोड़ा बहुत हिला पाया है, लेकिन जब भगवान शिव ने धीरे से अपना दाहिना पैर का अंगूठा रखा, तो रावण अपना हाथ हिला नहीं पाया, जो पर्वत के नीचे दब गया था। उसे असहनीय पीड़ा हुई और उसने जोर से शिव तांडव स्तोत्रम का पाठ किया।

“रावण असुर” का विवाह और उसका
पत्नियां: मंदोदरी, धान्यमालिनी और तीसरी पत्नी। अब हम जानेंगे कि मंदोदरी कौन थी और रावण असुर ने उससे विवाह कैसे किया।
मंदोदरी असुरों के राजा मायासुर और अप्सरा हेमा की पुत्री थीं। मंदोदरी सुंदर, पवित्र और धर्मपरायण थीं। उन्हें पंचकन्याओं में गिना जाता है, जिनके नाम का जाप करने से पाप दूर हो जाते हैं।
माया असुर और हेमा के दो पुत्र, "मायावी" और "दुंदुभी", और एक पुत्री, "मंदोदरी" थी। बाद में, "हेमा" स्वर्ग लौट गईं, और "मंदोदरी" और उनके भाई-बहन अपने पिता के साथ रह गए।

“उत्तरा रामायण” में, मेंढक से सुंदर कन्या में परिवर्तित हुई कन्या को माया ने अपनी प्रार्थनाओं के उत्तर में पाया, “रावण ने उसे देखा, उससे विवाह किया और उसे लंका ले गया।”
एक अन्य कथा के अनुसार, माया उसका विवाह रावण से कर देती है और दहेज के रूप में दंपति को लंका द्वीप उपहार में देती है।
“रावण असुर” के बच्चे और
रावण के तीन पत्नियों से छह पुत्र थे, जिन्हें "मंदोदरी" कहा जाता था। मघनाद रावण का सबसे बड़ा पुत्र था। उसका नाम मघनाद इसलिए पड़ा क्योंकि जन्म के समय उसकी चीख गरज के समान थी। देवराज इंद्र को पराजित करके स्वर्ग (इंद्रलोक) पर विजय प्राप्त करने के बाद मघनाद को इंद्रजीत नाम मिला। माघनाद एक पराक्रमी योद्धा थे। उनके पास ब्रह्मास्त्र, पशुपत अस्त्र और वैष्णव अस्त्र सहित कई शक्तिशाली दिव्य अस्त्र थे। उन्होंने दैत्यों (राक्षसों) के गुरु शुक्राचार्य के मार्गदर्शन में युद्ध कला में महारत हासिल की थी।
कहा जाता है कि मघनाद युद्ध में अजेय थे क्योंकि वे प्रत्येक युद्ध से पहले एक यज्ञ करते थे। वास्तव में, उन्होंने लक्ष्मण को दो बार और राम को भी एक बार हराया था।
हालांकि, अंततः लक्ष्मण ने विभूषण की सहायता से माघनाद के यज्ञ में बाधा डालकर उसे मार डाला। माघनाद का विवाह सुलोचना से हुआ था, जो नागों के राजा शेषनाग की पुत्री थी।

अतिकाय रावण और धान्यमालिनी के पुत्र थे। वे मगनाद के छोटे भाई थे। एक बार उन्होंने भगवान शिव को क्रोधित कर दिया। तब भगवान ने उन पर अपना त्रिशूल फेंका।
अतिकाय ने त्रिशूल को हवा में ही पकड़ लिया और भगवान शिव के समक्ष विनम्रतापूर्वक प्रणाम किया। इससे भगवान शिव प्रसन्न हुए और उन्हें धनुर्विद्या और दिव्य शस्त्रों के रहस्य बताकर आशीर्वाद दिया। अतिकाय युद्धकला में उत्कृष्ट निपुण थे। लक्ष्मण ने उनका वध कर दिया। अक्षयकुमार रावण का सबसे छोटा पुत्र था। रावण ने उसे अशोक वाटिका में हनुमान को रोकने के लिए भेजा था। अंततः हनुमान ने अक्षयकुमार को मार डाला।

नरंतक-देवंतक 72 करोड़ राक्षसों की सेना का नेतृत्व कर रहा था। अंततः बलि के पुत्र अंगद ने उसे मार डाला। युद्ध के दौरान भगवान हनुमान ने देवंतक का वध किया।

त्रिशिरा एक कुशल योद्धा थे। उन्होंने भगवान राम से युद्ध किया। अंततः भगवान राम ने उन्हें मार डाला।
“प्रहस्त” लंका में रावण की सेना का एक शक्तिशाली राक्षस योद्धा और सेनापति था। “लक्ष्मण” ने उसका वध किया।
रावण असुर की महानता
सम्राट रावण असुर श्रीलंका में 5000 वर्षों तक जीवित रहे। वे प्राचीन सिंहली जनजाति (हेला यक्का) के सूर्यवंश के वंशज थे। राजा रावण असुर प्राचीन सिंहली की पारंपरिक मार्शल आर्ट, अंगमपोरा के सर्वश्रेष्ठ योद्धाओं में से एक थे।
वे आयुर्वेद चिकित्सा के महान विद्वान थे। उन्होंने ही "अर्क शास्त्र" का आविष्कार किया था। "अर्क प्रक्षय" नामक पुस्तक इस सत्य को वर्तमान विश्व के समक्ष प्रकट करती है।
आयुर्वेदिक चिकित्सा में उनकी विशेष रुचि के कारण उन्होंने कई बीमारियों के इलाज का खुलासा करते हुए कई पुस्तकें लिखीं। अपनी एक पुस्तक में उन्होंने लिखा, "गोमांस खाने से मनुष्यों में लगभग अट्ठानवे नई बीमारियों का संक्रमण उत्पन्न हो सकता है।"
अपनी गर्भवती रानी "मंदोदरी" को स्वीकार करते हुए, उन्होंने "कुमार तंत्रया" नामक एक पुस्तक लिखी, जिसमें शिशु रोगों के उपचार का खुलासा किया गया है।
रावण ने एक यज्ञ किया
टक्कर मारना।
रावण ने राम और उनकी वानर सेना द्वारा निर्मित सेतु के लिए आरंभिक पूजा की और उन्हें आशीर्वाद भी दिया, क्योंकि वही उस समय उपलब्ध सबसे विद्वान पंडित और महान विद्वान थे।
श्रीलंका के ग्रंथों के अनुसार, रावण ने राम को युद्ध शुरू करने के लिए शुभ समय बताया और उन्हें विजय भाव का आशीर्वाद दिया।
रावण एक असाधारण वीणा वादक था।

खिलाड़ी।
रावण के कई चित्रों में उन्हें वीणा बजाते हुए देखा जा सकता है। ऐसा माना जाता है कि उन्हें संगीत में गहरी रुचि थी और वे वीणा वादक में अत्यंत निपुण थे।
रावण एक महान संगीतकार थे, जिन्होंने अपना स्वयं का वाद्य यंत्र "रावण वीणा" बनाया था। उन्होंने वायलिन के धनुष का भी आविष्कार किया। उन्होंने ही सबसे पहले रागों की रचना की। उन्होंने भगवान शिव की स्तुति में रचित सबसे मूल्यवान रचना "शिव तांडव" की भी रचना की।

रावण ने “सूर्योदय” को नियंत्रित किया। कहा जाता है कि वर्षों की तपस्या और समर्पण से रावण इतना शक्तिशाली हो गया था कि वह सूर्योदय और सूर्यास्त को नियंत्रित कर सकता था। अपने पुत्र मेघनाद के जन्म के समय, रावण ने ग्रहों को बच्चे के ग्यारहवें भाव में रहने का ‘निर्देश’ दिया, जिससे उसे अमरता प्राप्त होगी।
शनि ने ऐसा करने से इनकार कर दिया और बारहवें भाव में विराजमान हो गया।
इससे रावण इतना क्रोधित हुआ कि कहा जाता है कि उसने शनि देव पर अपनी गदा से आक्रमण किया और उन्हें कैद भी कर लिया।

बाद में उन्हें रावण नाम मिला।
जीवन, और वह भी शिव से।
रावण चाहता था कि शिव कैलाश से लंका चले जाएं, और इसके लिए उसने पर्वत को उठाने का प्रयास किया। लेकिन शिव ने अपनी शक्ति के बल पर पर्वत पर अपना पैर रख दिया, जिससे रावण की उंगली उनके एक अंगूठे से कुचल गई। रावण दर्द से कराह उठा, लेकिन साथ ही शिव की शक्ति से इतना मुग्ध हो गया कि उसने शिव तांडव स्तोत्रम का पाठ किया। ऐसा माना जाता है कि रावण ने संगीत के लिए अपने हाथ की नसें निकाल ली थीं।
शिव इससे प्रभावित होकर उसका नाम रावण (जो जोर से दहाड़ता है) रख दिया।
रावण अपने ही किए से शर्मिंदा हुआ।
पत्नी, जिसके कारण अंततः उसका
पतन।

जब राम की सेना धीरे-धीरे रावण की सेना को पराजित कर रही थी और केवल वही जीवित बचा था, तब रावण ने युद्ध का रुख मोड़ने के लिए एक शक्तिशाली यज्ञ करने का निर्णय लिया। लेकिन इसके लिए उसे एक ही स्थान पर डटे रहना था और अपनी जगह से हिलना नहीं था।
यह देखकर राम ने बलि के पुत्र अंगद और उसकी वानर सेना को यज्ञ बाधित करने के लिए भेजा। जब वे ऐसा करने में असफल रहे, तो अंगद रावण की पत्नी मंदोदरी को घसीटकर ले आया। रावण फिर भी नहीं हिला।
फिर उसने रावण पर चिल्लाते हुए उसे शर्मिंदा किया और बताया कि राम अपनी पत्नी को वापस पाने के लिए युद्ध लड़ रहे थे, जबकि रावण अपनी पत्नी को बचाने के लिए अपनी जगह से हिल भी नहीं रहा था। अंत में रावण हिल गया, जिससे उसका यज्ञ अधूरा रह गया।

रावण एक चिकित्सक के रूप में: रावण एक महान आयुर्वेदिक चिकित्सक और वैद्य शिरोमणि थे। उन्होंने नाड़ी परीक्षा (नाड़ी परीक्षण का विस्तृत विवरण) नामक बहुमूल्य ग्रंथ लिखा।
अर्क शास्त्र (जटिल रोगों के लिए प्रत्येक जड़ी बूटी के उपयोग, मात्रा और उपचारों का संकलन), अर्क परीक्षा (युक्ति और अर्क), कुमार तंत्राय (स्त्री रोग एवं बाल चिकित्सा), उद्दिशा चिकित्सा, ओड्डिया चिकित्सा और वातिना प्रकरणाय। रावण सिंदूरम चिकित्सा के संस्थापक थे। यह चिकित्सा घावों को तुरंत ठीक कर देती थी।

एक प्रतिभाशाली विद्वान
वह एक महान योद्धा होने के साथ-साथ एक विद्वान भी थे। रावण को सबसे बुद्धिमान राक्षस माना जाता था, जिसे चारों वेदों और छह उपनिषदों का पूर्ण ज्ञान था। एक समय उन्हें दहनना (दस सिर वाला राक्षस) के नाम से जाना जाता था, लेकिन जब उन्होंने कैलाश पर्वत को नष्ट करने का प्रयास किया, जहाँ भगवान शिव ध्यान कर रहे थे, तब उन्हें रावण नाम दिया गया।
दूसरी ओर, भगवान शिव ने अपने पैर के अंगूठे से पूरे पर्वत को धकेल दिया और रावण की बांह को कुचल दिया। दर्द से कराहते हुए रावण चीख उठा और रावण (चीखने वाला) के नाम से प्रसिद्ध हो गया। तब से वह भगवान शिव का भक्त बन गया और उसने शिव स्तोत्रम की रचना की।

विद्वान रावण अनेक विज्ञानों के ज्ञाता थे। उन्हें आयुर्वेद का गहन ज्ञान था। उन्होंने रावण संहिता की रचना की है, जिसमें आयुर्वेद के विज्ञान का वर्णन है।
रावण इतिहास का सबसे महान ज्योतिषी था और उसे काले जादू जैसी गुप्त विद्याओं का भी ज्ञान था। एक बार उसने नौ ग्रहों पर कब्जा कर लिया और उन्हें लग्न भाव में स्थापित कर दिया ताकि अपने पुत्र मेघनाथ को सर्वोत्कृष्ट बना सके। रावण को 64 प्रकार की विद्याओं का ज्ञान था और वेदों का उसे गहरा ज्ञान था।
रावण तंत्र विद्या का ज्ञाता था और शत्रुओं से लड़ते समय वह विचारों का भ्रम उत्पन्न करता था। उसने "रावण संहिता" नामक एक प्रसिद्ध ग्रंथ लिखा, जो उसके विद्वतापूर्ण कार्यों का उत्कृष्ट संकलन है।
अमरता की महिमा
रावण ने हजार वर्षों तक तपस्या की और भगवान ब्रह्मा से अमरता का वरदान प्राप्त किया, लेकिन उसे केवल तभी मारा जा सकता था जब उस पर उसकी नाभि पर हमला किया जाए।
विभीषण को इस बात का ज्ञान था और उसने युद्ध के दसवें दिन भगवान राम को अपनी कमजोरी के बारे में सूचित किया।
रावण एयरवेज
भगवान राम ने सीता को बचाने के बाद जिस पुष्पक विमान से उन्हें वापस लाया था, वह बहुत प्रसिद्ध है। लेकिन यह बात बहुत कम लोग जानते हैं कि रावण के पास ऐसे कई विमान थे और यहाँ तक कि उतरने के लिए हवाई अड्डे भी थे। श्रीलंका में कई ऐसे स्थान हैं जिन्हें आज भी रावण द्वारा इस्तेमाल किए गए हवाई अड्डों के रूप में जाना जाता है। अतुलनीय शक्ति
उनकी शक्ति अतुलनीय थी। शास्त्रों में यह स्पष्ट है कि वे समुद्र को गतिमान कर सकते थे और पर्वतों की चोटियों को चीर सकते थे। उन्होंने इंद्र के वज्र, इंद्र के हाथी ऐरावत के दांतों और विष्णु के चक्र से भी युद्ध किया था। शारीरिक रूप से उन्हें पराजित करने वाले एकमात्र मनुष्य कार्तवीर्य अर्जुन और वानरवाली थे।
रावण सिंहली लोगों की पारंपरिक मार्शल आर्ट अंगमपोरा के विशिष्ट योद्धाओं में से एक था।
तीनों लोकों का सम्राट

वह तीनों लोकों का सम्राट था। अपनी शक्ति और बुद्धिमत्ता के बल पर रावण ने न केवल मनुष्यों को बल्कि देवताओं और अन्य राक्षसों को भी पराजित किया था, जिससे वह तीनों लोकों में असुरों का सर्वशक्तिमान बन गया था।

विशाल साम्राज्य
रावण का साम्राज्य बहुत विशाल था, मतलब सचमुच बहुत विशाल। यह बाली, मलेशिया और कई अन्य स्थानों तक फैला हुआ था।
रावण का नाम
दशग्रीव, दशकंठ, इरावनन, रावण, रावण, दशमुख, दशानन, लंकापति, दासीस, लंकेश, लंकेश्वर, थोत्साकन (थाई), लवाना (मरनाओ) और दशमेश।

"रावण असुर" क्यों महान है?
इतिहास और कुछ अच्छे विषय क्या हैं?
उनमें मौजूद गुण
यह कहानी न तो "रामचरितमानस" में है और न ही "वालमीकि रामायण" में, लेकिन संभवतः यह "रामायण" के किसी बाद के संस्करण में रही होगी।
लंका के युद्धक्षेत्र में घातक बाण चलाने के बाद, भगवान राम ने अपने भाई लक्ष्मण से कहा, "रावन के मरने से पहले उसके पास जल्दी जाओ और उससे जितना ज्ञान वह साझा कर सकता है, करने का अनुरोध करो। वह दुष्ट तो है, लेकिन वह एक महान विद्वान भी है।"
आज्ञाकारी लक्ष्मण युद्धक्षेत्र पार करके रावण के पास दौड़े और उसके कानों में फुसफुसाए, "राक्षस राजा, अपने ज्ञान को अपने साथ नष्ट न होने दें। इसे हमारे साथ साझा करें और अपने पापों को धो डालें।" रावण ने बस मुँह फेरकर जवाब दिया।
क्रोधित लक्ष्मण राम के पास लौटकर बोले, “वह हमेशा की तरह अहंकारी है, इतना घमंडी कि कुछ भी साझा नहीं करता।” राम ने अपने भाई को सांत्वना दी और कोमल स्वर में पूछा, “रावण से ज्ञान मांगते समय तुम किस स्थिति में थे?” “लक्ष्मण,” ने उत्तर दिया, “मैं उसके सिर के पास बैठूंगा ताकि मैं उसकी बात स्पष्ट रूप से सुन सकूं।”
राम मुस्कुराए, अपना धनुष जमीन पर रखा और रावण के शवशय्या की ओर चल पड़े। लक्ष्मण ने आश्चर्य से देखा कि उनके दिव्य भाई रावण के चरणों में हाथ

जोड़कर घुटने टेक रहे हैं। अत्यंत विनम्रता से राम ने कहा, "लंका के स्वामी, आपने मेरी पत्नी का अपहरण किया है, यह एक जघन्य अपराध है जिसके लिए मुझे आपको दंडित करने के लिए विवश होना पड़ा है।"
अब आप मेरे शत्रु नहीं हैं। मैं आपको प्रणाम करता हूँ और आपसे निवेदन करता हूँ कि आप अपना ज्ञान मेरे साथ साझा करें। कृपया ऐसा करें, क्योंकि यदि आप ऐसा किए बिना मर जाते हैं, तो आपका सारा ज्ञान संसार में हमेशा के लिए खो जाएगा।
लक्ष्मण को आश्चर्यचकित करते हुए रावण ने अपनी आँखें खोलीं और राम को प्रणाम करने के लिए अपना हाथ उठाया और कहा,
काश, मुझे तुम्हारे शत्रु की अपेक्षा तुम्हारा शिक्षक बनने का अधिक समय मिलता। अपने उस असभ्य भाई के विपरीत, एक विद्यार्थी की तरह मेरे चरणों में खड़े होकर, तुम मेरे ज्ञान के योग्य हो। मेरे पास समय बहुत कम है, इसलिए मैं अधिक कुछ नहीं बता सकता, लेकिन मैं तुम्हें अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण सबक अवश्य बताना चाहता हूँ।
“जो चीजें आपके लिए हानिकारक होती हैं, वे आपको आसानी से आकर्षित करती हैं; आप अधीरता से उनकी ओर मुड़ जाते हैं। लेकिन जो चीजें वास्तव में आपके लिए अच्छी होती हैं, वे आपको आकर्षित करने में विफल रहती हैं; आप रचनात्मक रूप से उनसे दूर भागते हैं और अपनी टालमटोल को उचित ठहराने के लिए शक्तिशाली बहाने ढूंढते हैं।”
यही मेरे जीवन का ज्ञान है, “राम”, मेरे अंतिम शब्द, मैं इन्हें तुम्हें अर्पित करता हूँ।

रावण से मिलने वाला मूल्यवान सबक
“लक्ष्मण” को
रावण ने लक्ष्मण को यह शिक्षा दी कि यश प्राप्त करने के इच्छुक राजा को लोभ को सिर उठाते ही दबा देना चाहिए और दूसरों की भलाई करने का हर छोटा सा अवसर बिना किसी विलंब के ग्रहण करना चाहिए। लोभ इंद्रियों से आसक्ति और उनकी पूर्ति से उत्पन्न होता है। उन्हें उचित स्थान पर रखें, वे ज्ञान के द्वार हैं, न कि संदूषण के मार्ग। फिर वह उन्हें राजनीति और नैतिकता के बारे में बताता है जो...

अपने सारथी, द्वारपाल, रसोइए और भाई के शत्रु मत बनो, वे कभी भी तुम्हें नुकसान पहुंचा सकते हैं।
यह मत सोचो कि तुम हमेशा विजेता हो, भले ही तुम हमेशा जीत रहे हो। हमेशा उस मंत्री पर भरोसा रखो जो तुम्हारी आलोचना करता है।
कभी भी अपने दुश्मन को छोटा या शक्तिहीन मत समझो, जैसा मैंने "हनुमान" के बारे में सोचा था। कभी भी अपने रहस्य उजागर मत करो, जैसा मैंने "विभूषण" को हमारे सभी रहस्यों के साथ "राम" के पास जाने की अनुमति दी थी।
कभी यह मत सोचो कि तुम सितारों को मात दे सकते हो, वे तुम्हें वही देंगे जो तुम्हारे भाग्य में लिखा है।
ईश्वर से प्रेम करो या घृणा करो, लेकिन प्रेम असीम और दृढ़ होना चाहिए। जो चीजें आपके लिए हानिकारक होती हैं, आप आसानी से उनकी ओर दौड़ पड़ते हैं। इसलिए, आपको यथासंभव बुरे कार्यों से बचना चाहिए और उन्हें टालना चाहिए। जो चीज़ें वास्तव में आपके लिए अच्छी हैं, वे आपको आकर्षित नहीं करतीं; आप उन्हें रचनात्मक रूप से टालते हैं, अपनी टालमटोल को सही ठहराने के लिए मज़बूत बहाने ढूंढते हैं। इसलिए, आपको बिना किसी देरी के और जितनी जल्दी हो सके, अच्छे काम करने चाहिए।
इन्हीं शब्दों के साथ रावण की मृत्यु हो गई।
रावण एक महान वंश से थे, क्योंकि वे ब्रह्मांड के निर्माता भगवान ब्रह्मा के पोते और ऋषि विश्वराव के पुत्र तथा धन के देवता कुबेर के छोटे भाई थे। रावण एक विद्वान और कला पारखी थे। उन्हें आयुर्वेद और राजनीति विज्ञान का गहन ज्ञान था। रावण ने क्रोध, अहंकार, ईर्ष्या, सुख, दुःख, भय, स्वार्थ, वासना, महत्वाकांक्षा और बुद्धि जैसी नौ बुरी भावनाओं का त्याग किया, जो रावण के दस रूपों का गुणधर्म हैं और यही गुण उन्हें पूर्ण पुरुष बनाते हैं।
एक बार राम ने रावण को "महा ब्रह्म" कहकर संबोधित किया था। रावण का अतृप्त, सर्वभक्षी अहंकार ही उसकी सबसे बड़ी कमजोरी साबित हुआ, जिसने उसके सभी दिव्य गुणों को नकार दिया। राम रावण के ज्ञान और बुद्धिमत्ता से बहुत प्रभावित थे, इसीलिए उसे पराजित करने के बाद उन्होंने रावण की प्रशंसा की। यह सर्वविदित और सर्वमान्य सत्य है कि वे एक महान ब्राह्मण थे जो नियमित रूप से सभी रीति-रिवाजों का पालन करते हुए पूजा-अर्चना करते थे। इसके अतिरिक्त, वे वीणा वादन के साथ-साथ संध्या वंदनम भी करते थे।

अपने सौतेले भाई कुबेर से लंका छीनने के बावजूद रावण को एक कुशल और दयालु राजा माना जाता था। रावण का वध करने के बाद राम ने कहा कि संसार ने एक महान आत्मा को खो दिया।
वह बेहद बुद्धिमान होने के साथ-साथ एक अद्भुत शोधकर्ता भी थे, जिन्होंने तीन क्षेत्रों में गहन शोध किया: समय यात्रा, ब्रह्मांड का विकास और स्वर्ग से स्वर्ग तक का मार्ग।
यह कहना गलत नहीं होगा कि रावण दुनिया का सबसे अच्छा भाई था क्योंकि उसने अपनी बहन के लिए भगवान के खिलाफ मोर्चा संभाला था और जो अपनी बहन के लिए इतना कुछ कर सकता है वह वास्तव में बहुत महान होगा।
रावण हमेशा युद्ध के नियमों का पालन करता था, जबकि राम ने युद्ध के नियमों के विरुद्ध जाकर बाली की हत्या की।
वह अत्यंत बुद्धिमान था और उसे पहले से ही पता था कि उसके परिवार और स्वयं उसकी मृत्यु भगवान राम के हाथों ही होगी। रावण महिलाओं का सम्मान नहीं करता था, जबकि उसकी माता सीता के शब्द उन पर कोई प्रभाव नहीं डालते थे, भले ही सीता लंबे समय से लंका में थीं।
भगवान पर वृंदा का श्राप
“विष्णु”
हिंदू धर्मग्रंथों के अनुसार, तुलसी का पौधा वृंदा नामक स्त्री थी, जो तुलसी का पर्यायवाची शब्द है। उसका विवाह राक्षस राजा जालंधर से हुआ था। भगवान विष्णु के प्रति उनकी श्रद्धा और भक्ति के कारण उनके पति अजेय हो गए। हिंदू त्रिमूर्ति में संहारक देवता शिव भी जालंधर को पराजित नहीं कर सके। इसलिए शिव ने त्रिमूर्ति के संरक्षक देवता विष्णु से इस समस्या का समाधान निकालने का अनुरोध किया।
विष्णु ने जालंधर का वेश धारण करके वृंदा को छल किया। वृंदा की पवित्रता भंग हो गई और शिव ने जालंधर का वध कर दिया। वृंदा ने विष्णु को श्राप दिया कि उनका रंग काला हो जाए और वे अपनी पत्नी से विरक्त हो जाएं।
इस प्रकार, उनका रूप बदलकर काला "शालिग्राम" पत्थर बन गया और उनके "राम" अवतार में, उनकी पत्नी "सीता" का राक्षस राजा द्वारा अपहरण कर लिया गया और इस प्रकार वे उनसे अलग हो गईं।

रावण असुर का मंदिर

रावण को शिव के सबसे पूजनीय भक्तों में से एक माना जाता है, इसलिए कई स्थानों पर उनकी पूजा की जाती है। विदिशा जिले के कन्याकुब्ज ब्राह्मण रावण की पूजा करते हैं।
वे उन्हें समृद्धि के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करते हैं और उन्हें उद्धारकर्ता मानते हैं, यह दावा करते हुए कि "रावण" भी एक "कन्यकुब्ज ब्राह्मण" थे।
मध्य प्रदेश के विदिशा जिले के नटरन गांव के हजारों "कन्यकभुजा ब्राह्मण" प्रतिदिन "रावण" मंदिर में पूजा करते हैं और नैवेद्य और भोग (भगवान को अर्पित की जाने वाली बलि) करते हैं।
सदियों पहले राजा शिव शंकर ने उत्तर प्रदेश के कानपुर में एक मंदिर का निर्माण कराया था। रावण मंदिर को वर्ष में एक बार दशहरा के दिन रावण के कल्याण के लिए पूजा करने हेतु खोला जाता है।
बिस्राख के हिंदू भी रावण की पूजा करते हैं और दावा करते हैं कि उनका शहर रावण का जन्मस्थान है। गुजरात के सचोरा ब्राह्मण भी रावण के वंशज होने का दावा करते हैं और कभी-कभी रावण को अपने उपनाम के रूप में भी इस्तेमाल करते हैं।
मथुरा के कुछ "सारस्वत ब्राह्मण" अपने वंश के अनुसार "रावण" को सारस्वत ब्राह्मण होने का दावा करते हैं।
उपाध्याय यशस्त्रता 2 के "रावण" वंश का भी उल्लेख है, जो "गौतम गोत्र" के थे और आचार्य वसुदत्त के पुत्र थे, और जिन्हें "रावण का पुत्र" बताया गया है।
मध्य भारत के गोंडी लोग रावण के वंशज होने का दावा करते हैं, उन्होंने रावण और उसकी पत्नी मंदोदरी तथा उनके पुत्र मगहनदा के लिए मंदिर भी स्थापित किए हैं।
वे यह भी कहते हैं कि "रावण" एक प्राचीन गोंड राजा और उनकी जनजाति के दसवें "धर्मगुरु" थे।
इस प्रकार रावण एक महान व्यक्तित्व, सर्वश्रेष्ठ भाई, महान विद्वान, महान राजा, सर्वश्रेष्ठ वीणा वादक, ज्योतिषी, महान शासक, मार्शल आर्ट में निपुण, भगवान शिव का महान भक्त और कुल मिलाकर एक महान आत्मा और गुमनाम नायक था।